अध्याय 12

अय्यूब का उत्तर (भाग 1)

अय्यूब पर आरोप लगाने वालों को डांट (12:1-12)

अय्यूब के इस भाषण में मिज़ाज बदला-बदला सा लगा। पहले अय्यूब के भाषणों में निराशा और नाराजगी की झलक थी। न केवल सोपर की ओर से बल्कि तीनों मित्रों की ओर से जो कुछ कहा गया उसे सुनने के बाद अय्यूब के इस भाषण में उसका लहज़ा नरम पड़ गया।

''मेरे मित्र मुझ पर हंसते हैं'' (12:1-6)

[1]तब अय्यूब ने कहा, [2]''नि:सन्देह मनुष्य तो तुम ही हो और जब तुम मरोगे तब बुद्धि भी जाती रहेगी। [3]परन्तु तुम्हारे समान मुझ में भी समझ है, मैं तुम लोगों से कुछ कम नहीं हूँ। कौन ऐसा है जो ऐसी बातें न जानता हो? [4]मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता था, और वह मेरी सुन लिया करता था; परन्तु अब मेरे मित्र मुझ पर हँसते हैं; जो धर्मी और खरा मनुष्य है, वह हँसी का कारण हो गया है। [5]दु:खी लोग तो सुखियों की समझ में तुच्छ जाने जाते हैं; और जिनके पाँव फिसलते हैं उनका अपमान अवश्य ही होता है। [6]डाकुओं के डेरे कुशल क्षेम से रहते हैं, और जो परमेश्वर को क्रोध दिलाते हैं, वे बहुत ही निडर रहते हैं; अर्थात् उनका ईश्वर उनकी मुट्ठी में रहता है।''

आयतें 1, 2. सोपर को दिए अय्यूब के उत्तर में कटाक्ष दिखाई देता है। वास्तव में अय्यूब ने अपने तीनों मित्रों को उत्तर दिया जैसा कि बहुवचन सर्वनाम ''तुम'' से संकेत मिलता है। **मनुष्य तो तुम ही हो** समाज के विशेष लोगों के विशेष वर्ग का संकेत होगा। ''**और जब तुम मरोगे तब बुद्धि भी जाती रहेगी।**'' अय्यूब ने उनके आत्म-संतुष्ट दावों में श्रेष्ठता के अति विश्वास से भरे रवैये को देख लिया।

आयत 3. ''**तुम्हारे समान मुझ में भी समझ है।**'' ''समझ'' शब्द वस्तुत: ''हृदय'' (*lebab, लेबाब*) है। हृदय इब्रानी लोगों में ''भावना, विचार या इच्छा'' का केन्द्र माना जाता था।[1] पवित्र शास्त्र में इस शब्द का इस्तेमाल कई बार हुआ है। ''**कौन ऐसा है जो ऐसी बातें न जानता हो?**'' हर्जाना दिए जाने से सम्बन्धि मित्रों के दावे से सम्बन्धित प्राचीन समय में प्रसिद्ध कहावतें हुआ करती थीं।

आयत 4. अय्यूब को लगा कि जैसे वह अपने **मित्रों** की **हंसी** का पात्र है। किसी को भी अच्छा नहीं लगता कि लोग उस पर हंसें और उसका मज़ाक उड़ाएं। परन्तु प्राचीनकाल में यह सबसे बड़ा अपमान होता होगा (उत्पत्ति 38:23; भजन संहिता 31:11; 44:13-15; 69:10-12; यिर्मयाह 20:7; विलापगीत 3:14)।[2]

''मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता था, और वह मेरी सुन लिया करता था।'' ''करता था'' (*qore', क़ोर*) होते रहने वाली क्रिया का सूचक कृदंत शब्द है। भूमिका में अय्यूब को एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है जो परमेश्वर के सामने यह लगने पर भी कि कहीं उसके बच्चों ने पाप न किया हो, भेट ले आया करता था (1:5)। अय्यूब ने उस निकट मेल-जोल को याद किया, जब परमेश्वर उसके साथ था जब उसका अच्छा समय था; इसी बात को वह सबसे अधिक याद करता था। **''जो धर्मी और खरा मनुष्य है, वह हँसी का कारण हो गया है।''** जैसे पहले कहा गया था, अय्यूब के लिए ''धर्मी और खरा'' परमेश्वर का अपना आकलन था (1:8; 2:3)। अय्यूब को अपने निर्दोष होने को ध्यान में रखते हुए अपनी दुर्दशा का कारण समझ में नहीं आया।

आयत 5. जिन्होंने कभी दुःख न देखा हो उनके लिए दूसरों के दुःख और विपत्तियों को खारिज कर देना और शायद उनका मज़ाक उड़ाना आसान बात होती है (भजन संहिता 123:4)। इसके बजाय हमें ''रोने वालों के साथ रोना'' (रोमियों 12:15) और ''एक दूसरे का भार उठाना'' सीखना आवश्यक है (गलातियों 6:2)।

आयत 6. जब अय्यूब ने कहा कि **डाकुओं के डेरे कुशल क्षेम से रहते हैं**, तो शायद उसके मन में सबा और कसदी लोग होंगे, जिन्होंने उसके बैल, गदहे और ऊंट चुरा लिए थे और उसके सेवकों को मार डाला था (1:14, 15, 17)। उसने इस बात का खण्डन किया कि दुष्टों को अपने पाप के परिणाम भुगतने ही पड़ते हैं। सच्चाई यह है कि कई बार वे ''फलते फूलते'' हैं और **निडर रहते हैं**। बदला चुकाने का न्याय इस जीवन में हर बार देखने को नहीं मिलता। हम जानते हैं कि ''हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा'' (रोमियों 14:12)। परन्तु यह अंतिम न्याय के समय होगा।

सृष्टि में परमेश्वर का ज्ञान और सामर्थ दिखाई देती है (12:7-12)

[7]''पशुओं से तो पूछ और वे तुझे सिखाएँगे; और आकाश के पक्षियों से, और वे तुझे
बताएँगे। [8]पृथ्वी पर ध्यान दे, तब उससे तुझे शिक्षा मिलेगी; और समुद्र की मछलियाँ भी
तुझ से वर्णन करेंगी। [9]कौन इन बातों को नहीं जानता, कि यहोवा ही ने अपने हाथ से इस
संसार को बनाया है। [10]उसके हाथ में एक एक जीवधारी का प्राण, और एक एक देहधारी
मनुष्य की आत्मा भी रहती है। [11]जैसे जीभ से भोजन चखा जाता है, क्या वैसे ही कान से
वचन नहीं परखे जाते? [12]बूढ़ों में बुद्धि पाई जाती है, और लम्बी आयुवालों में समझ होती
है।''

आयतें 7-10. यह दिखाने के लिए कि इनाम और सज़ा किसी के चरित्र के अनुसार नहीं दिए जाते, अय्यूब ने सृष्टि के प्रमाण की ओर ध्यान दिलाया। उसने खेत के **पशुओं, आकाश के पक्षियों** और **समुद्र की मछलियों** का उदाहरण दिया। अय्यूब और उसके सभी मित्रों का मानना था कि इतिहास और हर चीज़ के अस्तित्व पर **यहोवा ही** का नियन्त्रण है जो हर जीवधारी को **प्राण** और **आत्मा** देता है (27:3; 33:4; देखें प्रेरितों 17:25)। अय्यूब और उसके मित्रों के भाषणों के बीच में ''यहोवा'' (*YHWH, यहवह*) या ''याहवेह'' केवल यहीं पर मिलता है।

परन्तु भूमिका (1:1-2:13) और उपसंहार (42:1-17) के बीच यह ईश्वरीय नाम कई बार मिलता है और पुस्तक के निकट इसका इस्तेमाल अय्यूब और परमेश्वर की बीच बातचीत के आरम्भ में किया गया है (38:1; 40:1, 3, 6)।

आयत 11. ''जैसे जीभ से भोजन चखा जाता है, क्या वैसे ही कान से वचन नहीं परखे जाते?'' अय्यूब के अलंकारिक प्रश्न ने उसके मित्रों को सृष्टि से सबक लेने की चुनौती दे डाली (12:7, 8)। किसी चीज़ को ''चखना'' यह तय करने के लिए कि वह सही है या गलत, एक इब्रानी अभिव्यक्ति थी (भजन संहिता 34:8; 119:103)।

आयत 12. एक लेखक ने **बूढ़ों** और **लम्बी आयु** को परमेश्वर की बात करने के रूप में देखा: ''*बुज़ुर्ग* और *बूढ़ा*।''[3] परन्तु यहां इसका अर्थ यह लगता है कि हम बुज़ुर्गों के अनुभव से जिन्होंने उम्र भोगी है, सीखें, जिससे समझ मिलेगी। प्राचीन समय का ज्ञान चीज़ों के सावधानीपूर्वक विचार करने के आधार पर होता था।

परमेश्वर की सामर्थ प्रगट की गई (12:13-25)

[13]''परमेश्वर में पूरी बुद्धि और पराक्रम पाए जाते हैं; युक्ति और समझ उसी में है। [14]देखो, जिसको वह ढा दे, वह फिर बनाया नहीं जाता; जिस मनुष्य को वह बन्द करे, वह फिर खोला नहीं जाता। [15]देखो, जब वह वर्षा को रोक रखता है तो जल सूख जाता है; फिर जब वह जल छोड़ देता है, तब पृथ्वी उलट जाती है। [16]उस में सामर्थ्य और खरी बुद्धि पाई जाती है; धोखा देनेवाला और धोखा खानेवाला दोनों उसी के हैं। [17]वह मंत्रियों को लूटकर बँधुआई में ले जाता, और न्यायियों को मूर्ख बना देता है। [18]वह राजाओं का अधिकार तोड़ देता है; और उनकी कमर को बन्धन से जकड़ता है। [19]वह याजकों को लूटकर बँधुआई में ले जाता और सामर्थियों को उलट देता है। [20]वह विश्वासयोग्य पुरुषों से बोलने की शक्ति और पुरनियों से विवेक की शक्ति हर लेता है। [21]वह हाकिमों को अपमान से लादता, और बलवानों के हाथ ढीले कर देता है। [22]वह अन्धियारे की गहरी बातें प्रगट करता, और मृत्यु की छाया को भी प्रकाश में ले आता है। [23]वह जातियों को बढ़ाता, और उनको नष्ट करता है; वह उनको फैलाता, और बँधुआई में ले जाता है। [24]वह पृथ्वी के मुख्य लोगों की बुद्धि उड़ा देता, और उनको निर्जन स्थानों में, जहाँ रास्ता नहीं है, भटकाता है। [25]वे बिन उजियाले के अन्धेरे में टटोलते फिरते हैं; और वह उन्हें ऐसा बना देता है कि वे मतवाले के समान डगमगाते हुए चलते हैं।''

आयत 13. ''परमेश्वर में पूरी बुद्धि और पराक्रम पाए जाते हैं; युक्ति और समझ उसी में है।'' बुद्धि के सब पहलू परमेश्वर के हैं। यशायाह ने मसीहा का विवरण इन्हीं शब्दों में दिया: ''और यहोवा की आत्मा, *बुद्धि* और *समझ* की आत्मा, *युक्ति* और *पराक्रम* की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी'' (यशायाह 11:2)। किसी कार्य को करने की योजना बनाने की ''बुद्धि'' और उसे अंजाम देने की सामर्थ या ''पराक्रम'' परमेश्वर के पास ही है।

आयतें 14 से 25 प्रकृति में तथा मानवीय सम्बन्धों में परमेश्वर की ''बुद्धि और पराक्रम''

को दिखाती हैं। अय्यूब ने परमेश्वर के एक से एक काम बताए जिनसे जीवन के हर पहलू पर उसके सर्वशक्तिमान होने का पता चलता है। परमेश्वर की अय्यूब की अवधारणा तीनों मित्रों की अवधारणा से कहीं बढ़कर थी।

आयत 14. ''देखो, जिसको वह ढा दे, वह फिर बनाया नहीं जाता।'' परमेश्वर के पास नष्ट करने की सामर्थ है, वे चाहे इमारतें हों, नगर, लोग या फिर देश (यिर्मयाह 19:11, 12)। परमेश्वर ने उन घमण्डी लोगों की योजनाओं को विफल कर दिया था जो बाबुल का बुर्ज बना रहे थे (उत्पत्ति 11:1-9), सदोम और अमोरा के दुष्ट नगरों को भस्म कर दिया (उत्पत्ति 19:1-29), और बाद में यरीहो की शहरपनाह को समतल कर दिया (यहोशू 6)।

क्रिया शब्द **बंद करे** (*sagar, सागार*) सोपर के पिछले भाषण में याद दिलाता है जहां NASB का पिछला अनुवाद ''बंद कर देता'' हुआ है (11:10 पर टिप्पणियां देखें)। यह तथ्य कि **वह फिर खोला नहीं जाता** परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ अधिकार का संकेत देता है (देखें यशायाह 22:22; प्रकाशितवाक्य 3:7)।

आयत 15. परमेश्वर के पास वर्षा पर अधिकार है (भजन संहिता 107:33-35)। वह **वर्षा को रोक** सकता है जिससे सूखा पड़ जाए, जैसा कि एलिय्याह के समय में हुआ था (1 राजाओं 17:1, 7; याकूब 5:17, 18)। वह पानी से **पृथ्वी उलट** भी सकता है, जैसा नूह के समय के बड़े जलप्रलय के समय हुआ था (उत्पत्ति 7:17-24)।

आयत 16. सामर्थ और खरी बुद्धि की अवधारणाएं आयत 13 से दोहराई गई हैं। रॉबर्ट एल. आल्डन ने लिखा है कि **धोखा देने वाला और धोखा खाने वाला** ''मुनष्यजाति की सम्पूर्णता को दर्शाता विवरण'' है।[4] अन्य शब्दों में संसार के सब लोग परमेश्वर के हैं और उसकी शक्ति के अधीन हैं।

आयत 17. ''वह मंत्रियों को लूटकर बँधुआई में ले जाता।'' परमेश्वर के पास समझदारों की समझ को बिगाड़ देने की सामर्थ है। ''मंत्रियों'' शब्द आम तौर पर उन के लिए इस्तेमाल होता है जो राजाओं को सलाह देते हैं। ''लूटकर बंधुआई में ले जाता'' (*sholal, शोलाल*) का अनुवाद ''लूटे हुए'' (NKJV), ''निर्वस्त्र'' (NIV), या ''नंगे'' (NJPSV) भी हो सकता है। विचार यह हो सकता है कि परमेश्वर उनकी समझ को लूट लेता है (देखें NJB) या उन्हें पागलों की तरह नंगा घुमाता है (देखें NEB)। इनमें से कोई भी विचार दूसरी पंक्ति **''और न्यायियों को मूर्ख बना देता है''** के बराबर है।

आयत 18. ''वह राजाओं का अधिकार तोड़ देता है।'' ''राजाओं का अधिकार'' ''राजाओं द्वारा लगाए गए बंधन'' (NEB) या ''राजाओं की पेटियां'' (NJB) के लिए हो सकता है। यदि ''राजाओं की पेटियां खोलता'' सही है तो शायद दूसरी पंक्ति (**''उनकी कमर को बन्धन से जकड़ता है''**) इस रूपक का उलट है। विचार यह हो सकता है कि परमेश्वर ''राजाओं का उदय और अस्त करता है'' (दानिय्येल 2:21)। इस नियम का श्रेष्ठ उदाहरण उसका बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को हटाना और फिर से बहाल करना है (दानिय्येल 4)।

आयत 19. ''वह याजकों को लूटकर बँधुआई में ले जाता और सामर्थियों को उलट देता है।'' इस्राएल के बनने और लेवीय याजकाई के बनने से पहले परमेश्वर के ''याजक'' हुआ करते थे (उत्पत्ति 14:18; निर्गमन 3:1; 18:1, 10-12)। मूर्तिपूजक धर्मों में भी पुरोहित

होते थे (उत्पत्ति 41:45; 47:22)। ''सामर्थियों'' शायद ''पैतृक पदों या पदवियों पर बैठे लोगों को'' कहा गया हो।[5] एक और सम्भावना यह है कि वे ''मन्दिर के सेवक'' (NJPSV) थे। परमेश्वर के पास ऐसे लोगों को अपमानित करने और उन्हें उनके पदों से हटा देने की सामर्थ है।

आयत 20. परमेश्वर समाज के उन लोगों की समझ को खामोश कर सकता है जो आम तौर पर अपने परामर्श और विशेषज्ञता पर निर्भर करते हैं। **विश्वासयोग्य पुरुषों** वाक्यांश **पुरनियों** के समान है।

आयत 21. लोगों में शक्तिशाली समझे जाने वालों के पास परमेश्वर के विरुद्ध कोई सामर्थ नहीं है, वे चाहे **हाकिम** (''राजकुमार''; भजन संहिता 107:40) हो या **बलवान**। आल्डन ने लिखा है, ''परमेश्वर सैनिक बंधन में बंधे लोगों के बंधन खोल देता है या, सरल NIV इंग्लिश में 'पराक्रमियों को निरस्तर कर देता है।'''[6]

आयत 22. ''वह अन्धियारे की गहरी बातें प्रगट करता, और मृत्यु की छाया को भी प्रकाश में ले आता है।'' संसार के आरम्भ से ही परमेश्वर अंधियारे को प्रकाश से छितराता रहा है (उत्पत्ति 1:3)। दानिय्येल नबी ने कहा, ''वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रगट करता है; वह जानता है कि अन्धियारे में क्या है, और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है'' (दानिय्येल 2:22)।

आयत 23. परमेश्वर की प्रभुता संसार की सब **जातियों** पर है (प्रेरितों 17:26)। यह नियम बाबुल, मादा-फारस, यूनान और रोमी साम्राज्य के उदय और पतन में साबित हो चुका है (दानिय्येल 2:31-45)। बाबुल के राजा बेलशस्सर ने दीवार के ऊपर एक हाथ को लिखते हुए देखा जो इस बात का संकेत था कि ''परमेश्वर ने [उसके] राज्य के दिन गिनकर उसका अंत कर दिया [था]'' (दानिय्येल 5:26; NIV)। जातियों तथा उनके हाकिमों पर परमेश्वर की प्रभुता के सम्बन्ध में आल्डन ने लिखा है, ''बिसात पर मोहरों की तरह वह उन्हें अपनी इच्छा से चलाता है।''[7]

आयतें 24, 25. मुख्य लोगों का अनुवाद इब्रानी शब्द *ro'sh* (*रोश*) से किया गया है जिसका अक्षरश: अर्थ ''मुखिया'' (NIV) है। यह हवाला आयत 23 में वर्णित जातियों के ''अगुओं'' के सम्बन्ध में है। **निर्जन स्थानों में जहां रास्ता नहीं है** के सम्बन्ध में एक टीकाकार ने कहा है, '''निर्जन स्थान' उस उलझन का संकेत है जिसमें से निकलने का कोई मार्ग नहीं है, आत्मिक और नैतिक खोखलेपन की जगह जहां उलझन ही उलझन है।''[8]

परमेश्वर उनकी **बुद्धि उड़ा देता** है इसलिए अगुवे अंधेरे में चलने वाले अंधे की तरह हो जाते हैं (व्यवस्थाविवरण 28:29; प्रेरितों 13:11) और **मतवाले** के जैसे हो जाते हैं जो लड़खड़ाते हुए चलता है (भजन संहिता 107:27)।

प्रासंगिकता

सच बोलो (अध्याय 12)

पुरानी कहावत ''छड़ियां और पत्थर मेरी हड्डियां तोड़ सकते हैं, पर शब्द मुझे कभी आहत नहीं करेंगे'' गलत है। सच तो यह है कि हम सब के सब तीखी ज़ुबान, कठोर शब्दों,

आलोचनाओं और आरोपों से बहुत बुरी तरह से आहत होते हैं, इसीलिए बाइबल में ऐसे बहुत से हवाले मिल जाते हैं जो अपनी जीभ की चौकसी करके यह ध्यान रखने की चुनौती देते हैं कि हम क्या कहते और कैसे कहते हैं। नीतिवचन 25:11 कहता है, ''जैसे चान्दी की टोकरियों में सोने के सेब हों, वैसा ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है।'' याकूब 1:19 कहता है, ''हे मेरे भाइयो, यह बात तुम जान लो हर एक मनुष्य सुनने के लिए तत्पर और बोलने में धीर और क्रोध में धीमा हो।'' इफिसियों 4:29 कहता है, ''कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उस से सुनने वालों पर अनुग्रह हो।'' याकूब 3:2-10 घोषणा करता है:

> इसलिए कि हम सब बहुत बार चूक जाते हैं: जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है। ... वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अंग है। ... देखो, थोड़ी सी आग से कितने बड़े वन में आग लग जाती है। जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, ... पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है जो कभी रुकती ही नहीं; वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है। इसी से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं; और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर से स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं शाप देते हैं। एक ही मुंह से धन्यवाद और शाप दोनों निकलते हैं। हे मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए।

अय्यूब और उसके तीनों मित्रों के बीच होने वाली बातचीत दु:खद तो थी, पर यह बातचीत ऐसी नहीं होनी चाहिए थी। अय्यूब 2:13 कहता है कि उसके तीनों मित्रों ने ''उसका दु:ख बहुत ही बड़ा जाना।'' परन्तु अय्यूब के तीनों मित्रों ने अय्यूब को अपने दु:ख से निकालने के लिए उसे तसल्ली, दिलेरी और सहायता देने के बजाय उसके प्रति कठोर टिप्पणियां की और आरोप लगाए। नीतिवचन 18:2 कहता है, ''मूर्ख का मन समझ की बातों में नहीं लगता, वह केवल अपने मन की बात प्रगट करना चाहता है।'' क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो राह चलते सलाह देते हों? हमारे प्रभु का भाई सही था जब उसने कहा, ''हे मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए'' (याकूब 3:10)। कल्पना करें कि अय्यूब के तीनों मित्र यदि उससे वही प्रश्न पूछते जो एलिय्याह ने एलीशा से पूछा था तो कितना अलग होता: ''जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिए करूं वह मांग'' (2 राजाओं 2:9; NIV)। उस तसल्ली की कल्पना करें जो वे उसे केवल इतना कहकर दे सकते थे, ''हम तेरे लिए दु:खी हैं।'' मेरा मानना है कि संवेदनात्मक बातचीत हमेशा दिल को छू लेती है। हम जो भी टिप्पणी करते हैं उससे या तो हमारे सम्बन्ध में आशीष मिलती है या हमारे सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं। अफ़सोस की बात थी कि इन लोगों में अय्यूब को उस तरीके का जवाब देने की समझ, दूरदृष्टि या करुणा नहीं थी जिससे उससे आशीष मिलती और उसे तसल्ली मिलती।

हमारे अध्याय 12 पर पहुंचने तक, अय्यूब अपने तीनों मित्रों की बातों से आहत हो चुका है। उसने अपने मित्र सोपर की ज़ुबान से अभी-अभी कठोर और संवेदनाहीन डांट सुनी है। अय्यूब उसे कैसे जवाब देगा? क्या वह बदले में अपनी ओर से आरोपों के साथ आरोपी की झड़ी लगा देगा? क्या वह ताहने भरे लहज़े में अपने आरोप लगाने वालों को गाली देगा या वह

अपने आपको काबू में रखते हुए केवल सच बोलेगा?

अय्यूब ने अपने तीनों मित्रों को डांट लगाते हुए आरम्भ किया। जब सोपर जैसा कोई व्यक्ति जो अपने आप में धर्मी होता है और वे हम पर बातों से हमला करने लगे तो बचाव की मुद्रा में आना आसान होता है। ज़ुबानी अलोचना का जवाब देने के लिए लोगों द्वारा आम तौर पर तरीका बचाव का और आहत कर ताने देना ही है। ताने देना तीखा जवाब है जो बुरा भला कहे जाने के इरादे से होता है और आम तौर पर यह बड़ा तीखा और दु:ख देने वाला होता है। अय्यूब ने सोपर को अपने जवाब का आरम्भ अपने तीनों मित्रों को ताने देते हुए डांटने से किया: ''नि:सन्देह मनुष्य तो तुम ही हो और जब तुम मरोगे तब बुद्धि भी जाती रहेगी'' (12:2)।

अय्यूब सच बोलकर अपनी बात पर अड़ा रहा। अपने तीनों मित्रों को ताने देते हुए उन्हें डांटने के बाद अय्यूब सच बोलते और यह कहते हुए अपनी बात पर डटा रहा, ''परन्तु तुम्हारे समान मुझ में भी समझ है, मैं तुम लोगों से कुछ कम नहीं हूँ'' (12:3)। मुझे बड़ा अच्छा लगा कि वह अपनी बात पर अड़ा रहा और उसने यह बात कही। अय्यूब एक समझदार व्यक्ति था और वह अपने तीनों मित्रों में से किसी से कम नहीं था। परमेश्वर ने उन चारों को जीवन और श्वास दिया था और वे सब उसकी दृष्टि में मूल्यवान थे। इन तीनों मित्रों की तरह, बहुत से लोगों के मन में दूसरों से बेहतर होने का भ्रम होता है और उनकी सोच यह होती है कि ''हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि मैं दूसरे मनुष्यों के समान हूं'' (लूका 18:11)। अय्यूब अपने आपको दूसरों से बेहतर नहीं मानता था पर वह अपने आपको किसी से कम भी नहीं मानता था। अय्यूब को यह पता नहीं था कि उस पर यह सारी विपत्तियां क्यों पड़ीं पर उसे यह पता था कि उसके तीनों मित्र उससे बेहतर नहीं थे।

''मेरे मित्र मुझ पर हंसते हैं।'' आयत 4 बहुत दु:खद है। किसी को भी हंसी का पात्र बनना और मित्रों के बीच मज़ाक का पात्र बनना अच्छा नहीं लगता। किसी को भी नीचा दिखना, हंसी उड़ाया जाना या अपना मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगता। परन्तु आयत 4 में अय्यूब ने दो बार इस बात का उल्लेख किया कि उसे ऐसा लगा जैसे उसके मित्र उसे हंसी का पात्र मानते हैं। वे अहंकारी और तंग सोच वाले लोग थे और उन्होंने इस तथ्य पर विचार नहीं किया था कि उनके विचार गलत हो सकते हैं। वे इस मामले में उनके साथ अय्यूब द्वारा अपने निर्दोष होने के विचारों की सच्चाई को मानने को तैयार नहीं थे। जब आयत 5 में अय्यूब ने टिप्पणी की तो उसने उन्हें बताया कि उनके लिए उस पर आरोप लगाना उन्हें बुरा भला कहना आसान है क्योंकि उनके साथ कभी ऐसा नहीं हुआ था।

फिर अय्यूब ने परमेश्वर की महानता की बात करते हुए सच बोला। अय्यूब को चाहे यह समझ नहीं थी कि यह सब विपत्तियां उस पर क्यों आईं, परन्तु फिर भी उसने आयत 9 में कहा कि ''यहोवा ने ही अपने हाथ से'' ऐसा किया है। अय्यूब ने सच बोला जब उसने अपने मित्रों को बताया कि परमेश्वर के विषय में ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन्हें वे और वह नहीं समझ सकते। याद रखें कि अय्यूब के मित्र अपने आपको उससे श्रेष्ठ मानते थे और स्पष्टतया उन्हें लगता था कि उन्होंने परमेश्वर के मन की बात जान ली है। अय्यूब ने अपने ''सयाने'' मित्रों से जानवरों और पक्षियों के पास बैठने को कहा कि क्या पता उन्हें उनके पास जाने से परमेश्वर का थोड़ा बहुत ज्ञान मिल जाए (12:7, 8)। अय्यूब के कहने का मतलब यह था कि सब जानवरों के

अंदर परमेश्वर का दिया हुआ सहज ज्ञान है, और हम सब परमेश्वर की सृजनात्मक महानता के बारे में कुछ नहीं बता सकते और न ही हम इस बारे में सब कुछ बता सकते हैं कि परमेश्वर जो करता है वह क्यों, और कैसे करता है।

अय्यूब ने कई बड़े-बड़े और सामर्थ के कामों की बात की जो परमश्वेर ने किए हैं, और करता है और कर सकता है (12:13-25)। अय्यूब ने कहा कि वह किसी को इस कदर ढाह सकता है कि उसे कोई फिर से नहीं बना सकता (12:14)। अय्यूब ने बताया कि परमेश्वर चाहे तो किसी को बंद कर सकता है जहां से कोई उसे छुड़ा नहीं सकता (12:14)। अय्यूब ने कहा कि परमेश्वर बारिश भेज भी सकता है और उसे रोक भी सकता है (12:15)। बाइबल के इतिहास में हम जानते हैं कि परमेश्वर ने पानी को बनाया और उसमें उन्हें अलग करने की ज़बर्दस्त सामर्थ है (उत्पत्ति 1:6, 9; निर्गमन 14:21; यहोशू 3:13; 2 राजाओं 2:8)। अय्यूब ने इस बात का उल्लेख किया कि परमेश्वर के पास जातियों को बनाने की सामर्थ है और यदि वह चाहे तो उसमें उन्हें नष्ट करने की सामर्थ है (12:23)।

अय्यूब अपने मित्रों को यह बताना चाहता था कि वह उनसे कम नहीं था बल्कि इस तथ्य से पूरी तरह से परिचित था कि इस संसार का नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में हैं। इसलिए सच बोलकर अय्यूब ने अपने मित्रों को उस पर आरोप लगाने देकर खामोश नहीं रहना था कि वे अपनी बातों से उसे आहत करें या उसे नीचा दिखाएं।

सारांश। इफिसियों 4:15 हर मसीही को ''प्रेम में सच्चाई से'' बोलने की आज्ञा देता है। यह शानदार अध्याय इन शब्दों के साथ समाप्त होता है, ''सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। और एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, ...'' (इफिसियों 4:31, 32)। अय्यूब ने सच बोला था। एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]*थियोलॉजिकल वर्डबुक ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* संपा. आर. लेयर्ड हैरिस, ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर ऐंड ब्रूस के. वाल्टके (शिकागो: मूडी प्रैस, 1980), 1:466 में एंड्रियू बॉलिंग, ''*lābab, लबाब*।'' [2]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ जॉब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 207. [3]वहीं, 213. [4]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 153. [5]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 451. [6]आल्डन, 154. [7]वहीं, 155. [8]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 121.